मनोवृत्ति (Attitude)

साधारण अर्थ में मनोवृत्ति व्यक्ति के मन की एक विशेष दशा होती है, जिसके द्वारा वह समाज की विभिन्न परिस्थितियों, वस्तुओं, व्यक्तियों आदि के प्रति अपने विचार या मनोभाव को प्रकट करता है। मनोवृत्ति का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर दिशासूचक रूप से पड़ता है जो की सकारात्मक या नकारात्मक कुछ भी हो सकता है।

आलपोर्ट ने मनोवृत्ति को परिभाषित करते हुए कहा है कि "मनोवृत्ति मानसिक तथा स्नायुविक तत्परता की एक स्थिति है, जो अनुभव द्वारा निर्धारित होती है और जो उन समस्त वस्तुओं तथा परिस्थितियों के प्रति हमारी प्रतिक्रियाओं को प्रेरित व निर्देशित करती है, जिनसे कि वह मनोवृत्ति संबंधित है।"

प्रारंभ में मनोवृत्ति के केवल भावात्मक पक्ष पर बल दिया जाता था। 1946 में थर्स्टन ने इसे परिभाषित करते हुए कहा कि "किसी मनोवैज्ञानिक विषय के पक्ष या विपक्ष में धनात्मक या ऋणात्मक भाव की तीव्रता को मनोवृत्ति कहते हैं।"

बाद के कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस बात पर बल दिया कि मनोवृत्ति में सिर्फ भावात्मक पक्ष नहीं होता बल्कि संज्ञानात्मक पक्ष भी होता है, अर्थात व्यक्ति में किसी वस्तु या घटना के संबंध में जानकारी या विश्वास की उपस्थिति भी होती है। आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिकों ने मनोवृत्ति की व्याख्या के लिए त्रिविमीय दृष्टिकोण को अपनाया, जिसे मनोवृत्ति का ABC दृष्टिकोण कहा जाता है। यहाँ A का अर्थ Affective या भावात्मक पक्ष है। B का अर्थ Behavioural अर्थात व्यवहारात्मक पक्ष तथा C का अर्थ Cognitive या संज्ञानात्मक पक्ष है। आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मनोवृत्ति संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं व्यवहारात्मक पक्षों का एक संगठित तंत्र है। जिसे मनोवृत्ति का ABC मॉडल कहा जाता है।

समकालीन अनुसंधानों के अनुसार मनोवृत्ति में व्यवहारात्मक पक्ष की उपस्थिति अनिवार्य नहीं है। कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या समूह

के बारे में गलत धारणाएँ रखता हो (संज्ञानात्मक पक्ष), बुरी भावनाएँ भी रखता हो (भावात्मक पक्ष) परंतु नैतिक मूल्यों या सामाजिक दबावों के कारण अपनी मनोवृत्ति के अनुरूप व्यवहार न दिखलावें। परीक्षा भवन में घूमते समय कोई व्यक्ति अश्वेतों के प्रति वैसा व्यवहार न करे जैसा की वह अपने देश में कर सकता है।

Kretch, Crutchfield & Ballachey (1982) के अनुसार "किसी एक वस्तु के संबंध में तीन संघटकों का स्थायी तंत्र मनोवृत्ति कहलाता है — संज्ञानात्मक संघटक यानी वस्तु के बारे में विश्वास, भावात्मक संघटन यानि वस्तु से संबंधित भाव तथा व्यवहारात्मक या क्रिया प्रवृत्ति संघटक यानि उस वस्तु के प्रति क्रिया करने की तत्परता।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मनोवृत्ति तीन संघटकों अर्थात संज्ञानात्मक, व्यवहारात्मक तथा भावात्मक संघटकों की एक स्थायी तंत्र है जिसमें संगति का गुण पाया जाता है। जिसके कारण व्यक्ति किसी वस्तु या घटना के प्रति एक खास ढंग से सोचता है तथा व्यवहार करने के लिए तत्पर रहता है।

मनोवृत्ति की विशेषताएँ -

मनोवृत्ति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं —

→ मनोवृत्ति एक ऐसा मनोभाव है जिसका संबंध किसी विषय, घटना या विचार से होता है। यह एक मानसिक एवं स्नायविक अवस्था है।

→ मनोवृत्ति जन्मजात नहीं होती है, बल्कि इसे व्यक्ति अपने जीवनकाल में सीखता है।

→ मनोवृत्ति में एक विशेष दिशा तथा तीव्रता होती है। दिशा या तो सकारात्मक होता है या नकारात्मक जिसमें तीव्रता के आधार पर अन्तर होता है।

 → मनोवृत्ति एक बार विकसित हो जाने के बाद सामान्यतः

Scanned with CamScanner

स्थायी रूप से बनी रहती है। विशेष परिस्थितियों में इसमें परिवर्तन भी पाया जाता है।

→ मनोवृत्ति में प्रेरणात्मक गुण भी होता है। व्यक्ति अपनी मनोवृत्ति से प्रेरित होकर कुछ खास तरह का व्यवहार अधिक तत्परता के साथ करता है।

→ मनोवृत्ति संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं व्यवहारात्मक संघटकों का एक परिणत संगठन है, जो एक-दूसरे के साथ संगति का गुण रखते हैं।

इसप्रकार मनोवृत्ति की कुछ खास-खास विशेषताएँ होती हैं, जिनके आधार पर उसे एक सही एवं अर्थपूर्ण ढंग से समझा जा सकता है।